3 copies only

30.5.53

1...

प्रिय त्यागीजी,

नमस्ते। जबसे आप सुरक्षा मंत्री हुये कईबार आपको पत्र लिखने की सोची किन्तु इधर कुछ ऐसा व्यस्त रहा कि लिख न पाया। क्षमा कीजियेगा।

सबसे पहले मेरी अत्यन्त ~~[illegible]~~ हृदय से दी हुई हार्दिक बधाई सुरक्षा मंत्री पद पर आसीन होने की स्वीकार करें। पिछले ~~[illegible]~~ 7 मार्च को मैं दिल्ली में था और आदरणीय नेहरूजी से भी मिला था। सुरक्षा विभाग से मेरा एक लम्बे अर्से से झगड़ा चल रहा था और उसी सिलसिले में मैं दिल्ली गया हुआ था। इस सम्बन्ध में मैंने पंडितजी को तीन चार पत्र भी समय समय पर लिखे थे। आपके सुरक्षा विभाग में जो अनुभव मुझे विगत 5-6 वर्षों में हुये उस सम्बन्ध में एक पुस्तक ही ~~[illegible]~~ लिख डालने की मेरी इच्छा हुई। फलतः मैंने पंडितजी को लिखे तीन पत्रों के अतिरिक्त 10-12 पत्र और लिख डाले और उन्हें Open Letters to Pandit Nehru, के नाम से ~~[illegible]~~ प्रकाशित कर उनकी आज्ञा प्राप्त कर प्रकाशित करने की मेरी इच्छा है। इसकी चर्चा भी मैंने उनसे की थी। मैंने और भी बहुत सी बातें इस सम्बन्ध में उनसे की थीं और तीन ही चार दिनों बाद जब पत्रों में पढ़ा कि आप सुरक्षामंत्री पद ग्रहण करने जा रहे हैं तो मुझको प्रसन्नता हुई वह शायद आपको भी न हुई होगी। मैं तभी आपको यह पत्र लिखना चाहता था पर सोचा कि इस समय तो बधाई के पत्रों का तांता बंधा होगा ~~इसमें मेरे पत्र को कौन पढ़ेगा~~ बाद में लिखूँगा, और तबसे टलते टलते आज यह पत्र लिखने की नौबत आई है।

मैं नेहरूजी ~~को~~ के नाम लिखे गये इन पत्रों की टाइप कापी ~~[illegible]~~ शीघ्र ही आपके पास भेजूँगा, अभी उनकी [illegible] बाकी है। इन पत्रों से ~~[illegible]~~ आपको अपने विभाग की ~~[illegible]~~ कार्यप्रणाली को समझने में संभव है काफी सहायता मिले। ~~[illegible]~~

[illegible]

ने यूनान और ईरान को साम्यवादी पराधीनता से बचाया, टर्की को शक्तिशाली बनाया और हिन्दचीन और अन्य दक्षिणपूर्वी एशिया के स्वतन्त्र देशों को सहायता प्रदान करने का वचन दिया है ।

युद्धोत्तर काल में हम किसी भी एक सप्ताह का ऐसा उदाहरण नहीं दे सकते जिस में कि हमें इतनी सफलताएं प्राप्त हुई हों जितनी कि गत सप्ताह में हुई हैं । फिर भी यदि हमने यह अनुभव न किया कि हमें अभी बहुत कुछ करना बाकी है, तो हम, जो कुछ हम ने प्राप्त किया है, उस को भी खो बैठेंगे ।

अमेरिकी लोगों को यह जानना सर्वाधिक आवश्यक है कि हमें अपार शक्ति और जटिल समस्याओं से संघर्ष करना पड़ रहा है । इन पर हम कुछ सप्ताहों या मासों में विजयी नहीं हो सकते क्योंकि ये विश्व व्यापी हैं । इन का समाधान वीरतापूर्ण अविचारित अथवा साहसिक कार्यों से नहीं हो सकता है । ये आज जीवन के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक आदि सभी क्षेत्रों में व्याप्त हैं ।

भाग्य ने अमेरिका पर अधिक से अधिक बोझ डाल दिया है जिसे अमेरिका पश्चिमी यूरोप के अन्य स्वतन्त्र राष्ट्रों की सहायता के बिना उठा नहीं सकता । गत सप्ताह `अतलान्तक सन्धि वाले राष्ट्रों के संघटन के लिए एक वास्तविक उन्नति का प्रतीक सिद्ध हुआ है और इसी लिए इसे `ऐतिहासिक सप्ताह` का नाम दिया जाना चाहिए ।-यू० एस० आई० एस०

~~इसके अलावा इस कार्य में दो लाभ~~ एक सुझाव मेरा तात्कालिक है। 2

मन्त्रियों के उद्घाटन, भाषण, दौरे इत्यादि को मैं अधिक महत्व नहीं देता। मैं चाहता हूँ कि आपके मन्त्री अपने आफिसों में डटकर बैठें और फाइलों को अपने अधीनस्थ कर्मचारियों की निगाह से नहीं बल्कि अपनी दृष्टि से देखें। मैं मानता हूँ कि समस्त ~~फाइलों को पूरा पढ़कर~~ शिकायती पत्रों को पढ़ना और उनपर विचार करना किसी भी एक व्यक्ति के लिये संभव नहीं है तथापि मेरा ख्याल है कि दो चार विश्वसनीय व्यक्तियों की शिकायतों पर पूरी तरह विचार करके यदि उचित कार्यवाही करली जाय तो शिकायती पत्रों की संख्या अपने आप ही कम हो जायगी। और यह हो रहा है कि हमारे मंत्रीगण शिकायती पत्रों पर अधिकारी वर्ग से जवाब मांग कर ही संतुष्ट हो जाते हैं और उनके गलत सलत उत्तरों को ही वेदवाक्य मान बैठते हैं। मुझे विश्वास है कि आप ऐसे मंत्रियों में नहीं हैं इसीलिये यह पत्र आपको लिख रहा हूँ।

जैसा मैंने लिखा है आपके पुलिस विभाग से मेरी लड़ाई चलते ४-५ वर्ष हो गये। फाइलें काफी मोटी होगई होंगी पर मैं चाहता हूँ कि यदि आपको समय मिले और उचित समझें तो उन्हें मंगाकर पूरी तरह देख डालें। आवश्यकता समझें तो मुझे भी बुलालें। जहाँ संदेह हो मुझसे पूछें केवल अधिकारी वर्ग की रिपोर्टों से ही प्रभावित न हों। मुझे विश्वास है कि आपको ऐसी ऐसी बातों [illegible] का पता लगेगा जो आज समूचे शासनतंत्र को घुन की तरह खाये जा रही हैं।

~~मेरा विश्वास~~ पुलिस विभाग की शुद्धता और पवित्रता पर देश का भविष्य निर्भर है। मुझे उस विभाग के कतिपय ऐसे विभागों का जिनका जनता से सीधा संबंध है जैसे [illegible] इत्यादि काफी अनुभव है और अपने उस अनुभव को मैं आपकी सेवा में रखने को तैयार हूँ बशर्ते कि आप भी इसकी आवश्यकता समझें। आपका पत्र आने पर आप जैसा कहेंगे मैं करने को तैयार हूँ।

आपके पत्र का आसरा देखते हुये,

आपका
[signature]

पुनश्च — आपके मामले के संबंध में अंग्रेजी में एक पैम्फलेट बहुत दिन हुये मैंने प्रकाशित किया था। उसकी एक प्रति इस पत्र के साथ भेज रहा हूँ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

अमेरिका से भारत को अंडों और दुग्धचूर्ण का निर्यात

वाशिंगटन, २३ मई : अमेरिकी कृषि विभाग की एक विज्ञप्ति में यह व्यक्त किया गया है कि अमेरिका की तीन प्राइवेट सहायता संस्थाओं ने भारत लेबनान, मिश्र, इराक और ईरान को कुल २६,३७६ पौंड अंडों और दूध का चूर्ण भेजने की स्वीकृति मांगी है।

इस में से भारत को ६७२ पौंड अंडे और २,३२,१७५ पौंड दूध का चूर्ण मिलेगा। —यू० एस० आई० एस०

गत सप्ताह विश्व का एक 'ऐतिहासिक सप्ताह'

न्यूयार्क टाइम्स द्वारा विवेचन

न्यूयार्क, २३ मई : अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र न्यूयार्क टाइम्स ने अपने सम्पादकीय में गत सप्ताह को अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में बहुत सी सफलताएं प्राप्त करने के कारण उसे पश्चिमी संसार के लिए एक ऐतिहासिक एवं स्मरणीय सप्ताह बताया है। पत्र ने इस सप्ताह में अमेरिकी विदेश मन्त्री डीन एचिसन द्वारा किए सफल कार्यों की भी सराहना की है।

पत्र ने लिखा कि अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग द्वारा अमेरिका ने संसार का नेतृत्व ग्रहण करने की दिशा में काफी प्रगति की है। भविष्य की ओर देखते हुए यह जानलेना चाहिए कि अभी काफी लम्बा मार्ग ते करना है जो अत्यन्त कठिन और संकटपूर्ण है।

राष्ट्र संघ, मार्शल योजना, रियो डी जनीरो सन्धि और उत्तरी अतलान्तक सन्धि पर सार रूप में प्रकाश डालते हुए पत्र ने बताया कि इन सब ने विश्व के लोगों को शान्ति और स्वतन्त्रता का मार्ग दिखाया है। अमेरिका

ने यूनान:..........

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

3

सत्यमेव जयते

MINISTER FOR DEFENCE ORGANISATION

निजी

नई दिल्ली,
जून १५, १९५३

प्रिय पद्म कान्त, वन्दे।

तुम्हारा पत्र मिला। बहुत लम्बा था इसलिये फुरसत में पढ़ने के लिये उठा रक्खा था। पढ़ा तो मालुम हुआ कि पत्र क्या है कदाचित एक लेख है। मतलब की बात कुछ न मिली। तुमने मेरी मिनिस्ट्री से अपने झगड़ों की बाबत लिखा है पर कोई अता-पता उन झगड़ों का इस लम्बे पत्र में न मिला, फिर कौन सी फ़ाइल मंगाकर पढ़ूं यह जानना असम्भव था। जो बातें तुमने मंत्रियों के कर्तव्य के सिलसिले में लिखी हैं वह प्राय: ठीक ही हैं। मंत्रियों को चाहिये कि जो शिकायतें उनके पास आयें उनको पढ़ें और उनकी जांच करें, पर शिकायत करने वालों को भी चाहिये कि मंत्रियों का समय लम्बे-लम्बे पत्रों से नष्ट न करें। जो लिखें वह स्पष्ट भाषा में तथा संक्षिप्त हो। यह सलाह तुम्हारे लिये है।

यह लिखने की आवश्यकता नहीं कि ~~आप~~ तुम अपने अनुभव से जो भी सलाह मुझे ~~दो~~ दोगे वह व्यर्थ नहीं जायेगी, पर सलाह दो लेक्चर नहीं। लेक्चर तो मैं ही तुम्हें बहुत सुना सकता हूं। तुम्हारे पत्र का इन्तज़ार करूंगा। और शिकायत की जांच करूंगा।

बधाई के लिये धन्यवाद। आशा है तुम अच्छी तरह होगे। तुम्हारे पत्र से बहुत पुरानी बातें ताजा हो गईं। आ॰श्री॰

तुम्हारा
महावीर
~~(महावीर त्यागी)~~

श्री पद्म कान्त मालवीय,
कृष्ण कुटीर, ७६, लूकरगंज,
~~[illegible]~~ इलाहाबाद

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत
National Archives of India

अभ्युदय प्रेस
प्रयाग
२९ जून १९५२ 4

माननीय त्यागी जी,

नमस्कार ।

पत्रोत्तर के लिए धन्यवाद ।

आश्चर्य है कि मेरा पत्र आप को लम्बा प्रतीत हुआ । यद्यपि घड़ी सामने रखकर अपने पत्र को पढ़ने मे मुझे अधिक से अधिक चार मिनट लगे फिर भी एक दृष्टि से उसे आप लम्बा कह भी सकते हैं क्यों कि आप लोग अपने साथियों से शायद पत्र में इतने की ही आशा करते हैं कि वह सीधे सादे अपना काम क्या है, आप से वह क्या चाहते हैं यह लिखदें और प्रार्थना करदें कि दया करके यह कार्य करादेने की कृपा करें । मेरे पत्र में यह सब कुछ था नहीं, क्यों कि मुझे आपसे या किसी से भी कोई अनुचित अनुग्रह पाने की इच्छा या अभिलाषा न थी, न है । ऐसा दिन लाने से पहले ही भगवान मुझे इस दुनिया से ही उठा ले उससे मेरी सदैव यही प्रार्थना रही है । मैंने तो आप को बधाई का पत्र लिखा था। आपके विभाग में होने वाले अन्यायों की ओर इशारा करते हुए अपने व्यक्तिगत अनुभव कि चर्चा की थी महज़ इसलिए कि आप चाहें तो अपने कर्तव्य पालन में मेरी सहायता पा सकते हैं । मंत्रियों के संबध में जो कुछ लिखा था वह लेक्चर नहीं अनुभव की बात थी । लेक्चर देना तो मैं जानता ही नहीं नहीं तो मैं भी आज लीडर न हो जाता । पत्रकार मैं जरूर रहा हूं । और वह भी ऐसा पत्रकार जो सम्पादकीय पद को व्यास-गद्दी समझने का आदी हो। और मैं मानता हूं कि शासन कर्ता व्यास गद्दी पर बैठने के अधिकारी नहीं। नाटक के अभिनेता अपने अभिनय के सम्बन्ध में उचित निर्णय दे ही क्या सकते हैं? हमारी सभ्यता में ब्राह्मण और क्षत्री इसीलिए अलग किये गये हैं। फिर भी आप की यह सलाह मुझे सर्वथा मान्य है कि शिकायत करने वालों को चाहिये मिनिस्टरों का समय लम्बे लम्बे पत्रों से नष्ट न करें । जो लिखें वह स्पष्ट भाषा में तथा संक्षिप्त हो । पर मेरा पत्र तो शिकायती पत्र था ही नहीं । बधाई का पत्र भी आप को शिकायती पत्र और लम्बा मालूम हुआ यह संभवत: इसलिए कि आप के कथनानुसार मेरे पत्र से बहुत सी पुरानी बातें आपके मन में ताज़ा हो गई । मुझे तो ऐसी कोई बात स्मरण नहीं आ रही है, हमारे और आप के बीच में, जो स्मरणीय हो। सन् १९३० मे फैज़ाबाद जेल मे हम लोग साथ थे, भाई जी (पं० केशवदेव मालवीय) के साथ दो एक बार शायद आपके दर्शन किये हों और बस । कांग्रेस में भी मैं अधिक दिनों तक नहीं रहा । आप का हमारा सम्पर्क ही बहुत कम हुआ है फिर भी मेरे पत्र ने आप के मन में बहुत सी बातें जागृत कर दीं यह मेरे लिए आश्चर्य की बात अधिक है या दु:ख अथवा गौरव की मैं सोच नहीं पाता । मैने तो आप को सदैव एक ईमानदार, धुनी, और फक्कड़ कांग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में जान रक्खा था। आप के विभाग के कुछ अनुभव इन विगत ५-६ सालों में मुझे हुये थे, चाहता था कि उन्हें आपके सामने रक्खूं और

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

5

इस प्रकार देश की कुछ सेवा हो जाय और आप का कार्य काल भी सफल हो । इसीलिए बधाई का पत्र भी लिखा नहीं तो साधारण तया आजके अधिकारारूढ़ कांग्रेसी नेताओं से मैं हज़ारों मील दूर रहना पसन्द करता हूं ।

मुझे नहीं मालूम था कि आप को मेरा पत्र लम्बा और शिकायती पत्र दिखलाई देगा और आप को उसमें लेक्चर की बू आये गी । मैं मानता हूं कि लेक्चर तो आप ही मुझे बहुत सुना सकते हैं । यह आप का जन्म सिद्ध अधिकार है । मैं तो न कभी नेता रहा, न लेक्चर देना सीखा । व्यासपीठ या सम्पादकीय गद्दी पर बैठने वाले लेक्चर नहीं दिया करते, सत्य और असत्य में विभेद कर सत्य को प्रकट किया करते हैं दूसरों के लाभ के लिए, स्वार्थ के लिये नहीं । ऐसे दो एक सत्य मेरे पत्र मे जरूर थे और यदि उनके कारण आपको कोई कष्ट पहुंचा हो तो मैं क्षमा चाहता हूं । भूल का कारण साफ है। पत्र लिखते समय ~~उनकी~~ आपकी कुर्सी का मुझे ध्यान ही नहीं रहा । इस भारी भूल के लिए मैं बारबार क्षमा प्रार्थी हूं । मेरे सामने त्यागी जी मात्र थे ।

मैंने अपने पत्र के साथ अपना लिखा अंग्रेजी का एक पैम्फ्लेट "A tale of woe" भेजा था । मेरे मामले की सारी बातें उसमे विस्तार के साथ दी हुई थीं । उससे आप को सारी बातें ज्ञात हो जातीं पर उसे भूल कर आप मेरे बधाई के पत्र में झगड़ों का अता पता ढूंढते रहे तो भला कैसे पता चलता ?

अन्त में मैं इस आश्वासन के लिए कि "अपने अनुभव से जो भी सलाह मुझे देगे वह व्यर्थ नहीं जाय गी" आप का आभार मानता हूं । यहां मैं इतना कह देना आवश्यक समझता हूं कि आपके विभाग से मेरा जो झगड़ा इतने लम्बे अर्से तक चला उसका मुझसे जहां तक व्यक्तिगत संबध है, उसका उतना अंश अब करीब करीब समाप्त प्राय है और अपने मामले में मैं आप की किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं चाहता । मेरा बंगला (नं० १ नेपियर और अब ब्रिगेडियर पोनाप्पा रोड प्रयाग) भूमि हर कानून (Land Acquisition Act) के अन्तर्गत सरकार ले रही है, स्थानीय भूमिहर अधिकारी के सम्मुख सारी बहस इत्यादि हो चुकी , केवल मावज़े की रकम की घोषणा होनी मात्र बाकी है । लिहाजा इस व्यक्तिगत किस्से को तो अब खत्म ही समझना चाहिये । अपने मामले में तो सिवा इसके कि सरकार जो कुछ करे जल्दी करे देर न करे , घुला घुला कर तड़पा तड़पा कर न मारे इसके सिवा मैंने कभी कुछ कहा ही नहीं और न आगे ही भगवान चाहेंगे तो कहूं गा । हां, इन तमाम कार्यवाहियों के बीच में जो जो कुछ हुआ वह क्यों हुआ, ~~इन कार्यवाहियों के बीच में जो जो कुछ हुआ वह क्यों हुआ~~, इन कार्यवाहियों से जनता को कष्ट और सरकार को नुकसान पहुंचा या नहीं , सरकारी आफिसर इस प्रकार जनता को तंग क्यों करते हैं, गैर कानूनी और मूर्खतापूर्ण, सरकार को आर्थिक और नैतिक नुकसान पहुंचाने वाली कार्यवाहियां करने वाले कौन कौन हैं और ऐसा वह क्यों करते हैं, क्या किया जाय जिसमें भविष्य में ऐसी बातें न हो सकें यह प्रश्न है जो व्यक्तिगत नहीं

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

6

सार्वजनिक है क्यों कि ऐसा कुछ मेरे साथ ही थोड़े हुआ या होता है। कैन्टून्मेन्ट में रहने वाले अधिकांश लोग परेशान और दुखी रहते हैं। यह आवश्य है कि मैंने खुशामद किसी की नहीं की, दिया लिया नहीं, निडरता के साथ बातें की, अन्याय के आगे सर नहीं झुकाया और इस कारण चिढ़कर आप के विभाग ने सरकारी शान के नाम पर तेज़ से तेज़ अपने हथियार चलाये और मुझे सबक सिखाना चाहा। इस लड़ाई की नींव ही सरकार की ओर से गलत रक्खी गई थी और इसलिये अन्त तक मेरी राय में सरकार गलती ही करती गई। अन्तिम अध्याय अभी बाकी है। वह भी समाप्त हो जाय तब चीज़ें और भी साफ हो जांय गी

आप के इस उत्तर के बाद आप से कुछ कहना या लिखना व्यर्थ है अत: पिछला पत्र तथा उससे भी बड़ा यह पत्र पढ़ने का कष्ट उठाने के लिए आप से बार बार कर बद्ध क्षमा मांगते हुये इस अध्याय को यहीं समाप्त करते हुये मैं अपनी भूल को मुक्त कंठ से स्वीकार करता हूं। आप को पत्र लिखने के पहले ही मुझे यह सोच लेना चाहिये था कि मैं किसको और क्या लिख रहा हूं।

आज के कांग्रेसी मंत्रियों इत्यादि के संबध में तो किसी प्राचीन कवि की यह उक्ति ही अधिक चरितार्थ दिखाई देती है :-

जो सुख होय अजानन को तो ,
सुजान दुखी कंहु ठौर न पावें।
जो घन हांथ बुरे के लगे तो,
भले जनके कछु काम न आवे ।।
जोगी बढ़ैतो कटाइ के चन्दन,
जारि कैं अंग भभूत लगावे।
राज चमार के हांथ लगे तो,
दिना दस चाम के दाम चलावे ।।

आज का कांग्रेसी शासन सेमर के उस तरू के समान है जिसके संबध में एक प्राचीन कवि ने कहा है :-

कंज बन जानि हंस मारि मन भृंग फिरे,
गन्ध बन मृगन के भंग कर डारे तें।
पाके फल जानि, शुक पुंज पछताने आन ,
जानि के बसन्त बात वृथा पात डारे तें ।।
देखि अरूणाई मन मांहि तुव फूलन की,
आभिष अहारी गृद्ध वायस विडारे तें।
एरे तरू सेमर के सिफत तिहारी यही ,
आश दे दे पच्छिन निराश करि डारे तें ।।

आप का :-
पन्नालाल [signature]

मानीय श्री महावीर त्यागीजी
मंत्री सुरक्षा संगठन
केन्द्रीय भारत सरकार, नई दिल्ली

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India
NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

13/4C ...

अभ्युदय प्रेस
प्रयाग
२९ जून १९५३ 7

माननीय त्यागी जी,

नमस्कार ।

पत्रोत्तर के लिए धन्यवाद ।

आश्चर्य है कि मेरा पत्र आप को लम्बा प्रतीत हुआ । यद्यपि घड़ी सामने रखकर अपने पत्र को पढ़ने में मुझे अधिक से अधिक चार मिनट लगे। फिर भी एक दृष्टि से उसे आप लम्बा कह भी सकते हैं क्यों कि आप लोग अपने साथियों से शायद पत्र में इतने की ही आशा करते हैं कि वह सीधे सादे अपना काम क्या है, आप से वह क्या चाहते हैं यह लिखदें और प्रार्थना करदें कि दया करके यह कार्य करादेने की कृपा करें । मेरे पत्र में यह सब कुछ था नहीं, क्यों कि मुझे आपसे या किसी से भी कोई अनुचित अनुग्रह पाने की इच्छा या अभिलाषा न थी, न है । ऐसा दिन आने से पहले ही भगवान मुझे इस दुनिया से ही उठा ले उससे मेरी सदैव यही प्रार्थना रही है । मैंने तो आप को बधाई का पत्र लिखा था। आपके विभाग में होने वाले अन्यायों की ओर इशारा करते हुए अपने व्यक्तिगत अनुभव कि चर्चा की थी, महज़ इसलिए कि आप चाहें तो अपने कर्तव्य पालन में मेरी सहायता पा सकते हैं । मंत्रियों के संबंध में जो कुछ लिखा था वह लेक्चर नहीं अनुभव की बात थी । लेक्चर देना तो मैं जानता ही नहीं नहीं तो मैं भी आज लीडर न हो जाता? पत्रकार मैं जरूर रहा हूं । और वह भी ऐसा पत्रकार जो सम्पादकीय पद को व्यास-गद्दी समझने का आदी हो। गोकि मैं मानता हूं कि शासन कर्ता व्यास गद्दी पर बैठने के अधिकारी नहीं। नाटक के अभिनेता अपने अभिनय के सम्बन्ध में उचित निर्णय दे ही क्या सकते हैं? हमारी सभ्यता में ब्राह्मण और क्षत्री इसीलिए अलग किये गये हैं। फिर भी आप की यह सलाह मुझे सर्वथा माकूल है कि शिकायत करने वालों को चाहिये मिनिस्टरों का समय लम्बे लम्बे पत्रों से नष्ट न करें । जो लिखें वह स्पष्ट भाषा में तथा संक्षिप्त हो । पर मेरा पत्र तो शिकायती पत्र था ही नहीं । बधाई का पत्र भी आप को शिकायती पत्र और लम्बा मालूम हुआ यह संभवत: इसलिए कि आप के कथनानुसार मेरे पत्र से बहुत सी पुरानी बातें आपके मन में ताज़ा हो गईं । मुझे तो ऐसी कोई बात स्मरण नहीं आ रही है, हमारे और आप के बीच में, जो स्मरणीय हो। सन् १९३० में फैजाबाद जेल में हम लोग साथ थे। भाई जी (पं० केशवदेव मालवीय) के साथ दो एक बार शायद आपके दर्शन किये हों और बस । कांग्रेस में भी मैं अधिक दिनों तक नहीं रहा । आप का हमारा सम्पर्क ही बहुत कम हुआ है। फिर भी मेरे पत्र ने आप के मन में बहुत सी बातें जागृत कर दीं यह मेरे लिए आश्चर्य की बात अधिक है या दु:ख अथवा गौरव की मैं सोच नहीं पाता । मैंने तो आप को सदैव एक ईमानदार, धुनी, और फक्कड़ कांग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में जान रक्खा था। आप के विभाग के कुछ अनुभव इन विगत ५-६ सालों में मुझे हुये थे, चाहता था कि उन्हें आपके सामने रक्खूं और

205

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत
National Archives of India

इस प्रकार देश की कुछ सेवा हो जाय और आप का कार्य काल भी सफल हो । इसीलिए बधाई का पत्र भी लिखा नहीं तो साधारण तथा आजके अधिकारारूढ़ कांग्रेसी नेताओं से मैं हजारों मील दूर रहना पसन्द करता हूं ।

मुझे नहीं मालुम था कि आप को मेरा पत्र लम्बा और शिकायती पत्र दिखलाई देगा और आप को उसमें लैक्चर की बू आये गी । मैं मानता हूं कि लैक्चर तो आप ही मुझे बहुत सुना सकते हैं । यह आप का जन्म सिद्ध अधिकार है । मैं तो न कभी नेता रहा, न लैक्चर देना सीखा । व्यासपीठ या सम्पादकीय गद्दी पर बैठने वाले लैक्चर नहीं दिया करते, सत्य और असत्य में विभेद कर सत्य को प्रकट किया करते हैं दूसरों के लाभ के लिए, स्वार्थ के लिये नहीं । ऐसे दो एक सत्य मेरे पत्र में जरूर थे और यदि उनके कारण आपको कोई कष्ट पहुंचा हो तो मैं क्षमा चाहता हूं । भूल का कारण साफ है। पत्र लिखते समय आपकी कुर्सी का मुझे ध्यान ही नहीं रहा । इस भारी भूल के लिए मैं बारबार क्षमा प्रार्थी हूं । मेरे सामने त्यागी जी मात्र थे ।

मैंने अपने पत्र के साथ अपना लिखा अंग्रेजी का एक पैम्फ्लेट "A tale of woe" भेजा था । मेरे मामले की सारी बातें उसमें विस्तार के साथ दी हुई थीं । उससे आप को सारी बातें ज्ञात हो जातीं पर उसे भूल कर आप मेरे बधाई के पत्र में झगड़ों का अता पता ढूंढते रहे तो भला कैसे पता चलता ?

अन्त में मैं इस आश्वासन के लिए कि "अपने अनुभव से जो भी सलाह मुझे देंगे वह व्यर्थ नहीं जाय गी" आप का आभार मानता हूं । यहां मैं इतना कह देना आवश्यक समझता हूं कि आपके विभाग से मेरा जो झगड़ा इतने लम्बे अर्से तक चला उसका मुझसे जहां तक व्यक्तिगत संबंध है, उसका उतना अंश अब करीब करीब समाप्त प्राय है और अपने मामले में मैं आप की किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं चाहता । मेरा बंगला (नं० १ नैप्पियर और अब ब्रिगेडियर पौनाप्पा रोड प्रयाग) भूमि हर कानून (Land Acquisition Act) के अन्तर्गत सरकार ले रही है, स्थानीय भूमिहर अधिकारी के सम्मुख सारी बहस इत्यादि हो चुकी , केवल मावजे की रकम की घोषणा होनी मात्र बाकी है । लिहाजा इस व्यक्तिगत किस्से को तो अब खत्म ही समझना चाहिये ।अपने मामले में तो सिवा इसके कि सरकार जो कुछ करे जल्दी करे, देर न करे , घुला घुला कर तड़पा तड़पा कर न मारे इसके सिवा मैंने कभी कुछ कहा ही नहीं और न आगे ही भगवान चाहेंगा तो कहूं गा । हां, इन तमाम कार्यवाहियों के बीच में जो जो कुछ हुआ वह क्यों हुआ, ~~इन कार्यवाहियों के बीच में जो जो कुछ हुआ वह क्यों हुआ,~~ इन कार्यवाहियों से जनता को कष्ट और सरकार को नुकसान पहुंचा या नहीं , सरकारी आफिसर इस प्रकार जनता को तंग क्यों करते हैं, गैर कानूनी और मूर्खतापूर्ण, सरकार को आर्थिक और नैतिक नुकसान पहुंचाने वाली कार्यवाहियां करने वाले कौन कौन हैं और ऐसा वह क्यों करते हैं, क्या किया जाय जिसमें भविष्य में ऐसी बातें न हो सकें यह प्रश्न है जो व्यक्तिगत नहीं

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

सार्वजनिक है क्यों कि ऐसा कुछ मेरे साथ ही थोड़े हुआ या होता है। केन्टूनमेन्ट में रहने वाले अधिकांश लोग परेशान और दुखी रहते हैं। यह आवश्य है कि मैंने खुशामद किसी की नहीं की, दिया लिया नहीं, निडरता के साथ बातें की, अन्याय के आगे सर नहीं झुकाया और इस कारण चिढ़कर आप के विभाग ने सरकारी शान के नाम पर तेज़ से तेज़ अपने हथियार चलाये और मुझे सबक सिखाना चाहा। इस लड़ाई की नींव ही सरकार की ओर से गलत रक्खी गई थी और इसलिये अन्त तक मेरी राय में सरकार गलती ही करती गई। अन्तिम अध्याय अभी बाकी है। वह भी समाप्त हो जाय तब चीजें और भी साफ हो जांय गी

आप के इस उत्तर के बाद आप से कुछ कहना या लिखना व्यर्थ है अत: पिछला पत्र तथा उससे भी बड़ा यह पत्र पढ़ने का कष्ट उठाने के लिए आप से बार बार कर बद्ध क्षमा मांगते तथा इस अध्याय को यहीं समाप्त करते हुये मैं अपनी भूल को मुक्त कंठ से स्वीकार करता हूं। आप को पत्र लिखने के पहले ही मुझे यह सोच लेना चाहिये था कि मैं किसको और क्या लिख रहा हूं।

आज के कांग्रेसी मंत्रियों इत्यादि के संबंध में तो किसी प्राचीन कवि की यह उक्ति ही अधिक चरितार्थ दिखाई देती है :-

जो सुख होय अजानन को तो ,
    सुजान दुखी कहुं ठौर न पावैं ।
जो धन हाथ बुरे के लगे तो,
    भले जनके कछु काम न आवै ।।
जोगी चढ़ैतो कटाछ के चन्दन,
    जारि कै अंग भभूत लगावै।
राज चमार के हाथ लगे तो,
    दिना दस चाम के दाम चलावै ।।

आज का कांग्रेसी शासन सेमर के उस तरु के समान है जिसके संबंध में एक प्राचीन कवि ने कहा है :-

कैंध कन जानि हंस मारि मन मूढ़ फिरे,
गन्ध कन मुगन के भौं कर डारे तें ।
पाके फल जानि, शुक पुंज पछताने आन ,
जानि के बसन्त बात वृथा पात डारे तें ।।
देखि ललचाई मन मांहि तुव फूलन की,
आमिष अहारी गृद्ध वायस विडारे तें ।
एरे तरु सेमर के सिफत तिहारी यही ,
आस दे दे पक्षिन निरास करि डारे तें ।।

आप का :-
पन्नालाल मालवीय.

श्रीयुत् महावीर त्यागीजी
मंत्री सुरक्षा संगठन
राष्ट्रीय भारत सरकार
नई दिल्ली

97
205

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

२-२-५४ 10

माननीय त्यागी जी,

आपका ~~[illegible]~~ (१५जून५३का) पत्र मुझे समय से मिल गया था। उसका उत्तर भी २१जून ५३ को ही लिख कर रख दिया था। अब तक भेजा नहीं क्योंकि इतने दिन इसी उधेड़ बुन में पड़ा रहा कि पत्र आपको भेजूं भी या नहीं। अन्त में आज यही तय किया कि आप मुझे अपना मानें या नहीं मैं आपको अपना मानता हूं और अपनों से दुराव ठीक नहीं है। अपनों के सामने तो सच्चे हृदय से अपने हृदय की बातें कह देने में ही ईमानदारी और सत्य भी रहा है।

~~इस बीच में बहुत कुछ हो चुका है। इस संबंध में हाल ही में [illegible] श्री विद्याशंकर जी I.C.S. को लिखे गये अपने पत्र की प्रतिलिपि भेज रहा हूं। वर्तमान और आगामी स्थिति का पता इससे लग जायगा।~~ इसी लिये इतने दिनों बाद यह पत्र आपको भेज रहा हूं। "त्वदीयं वस्तु गोविन्द, तुभ्यमेव समर्पये।" ~~आशा है आप प्रसन्न और स्वस्थ होंगे।~~

आशा है आप प्रसन्न और स्वस्थ होंगे।

आपका

माननीय श्री महावीर त्यागी जी
सुरक्षा मंत्री
भारतीय प्रजातंत्र, नई दिल्ली.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

"चतुर्थ लक्ष्य" के प्रधान पद के लिए रॉकफेलर नामजद

वाशिंगटन, ३ नवम्बर - प्रैसिडेन्ट ट्रूमैन ने प्रेस सम्मेलन में घोषणा की है कि भूतपूर्व उपविदेश मन्त्री तथा अन्तर अमेरिकी मामलों के समन्वयकर्ता नेल्सन रोकैफलर को अमेरिकी चतुर्थ लक्ष्य कार्य क्रम के सलाहकार बोर्ड का प्रधान नामजद किया जाता है ।

व्हाइट हाउस के सहायक प्रेस मन्त्री ने बताया कि इस नियुक्ति से राजदूत कैपस बेनिक के, जो चतुर्थ लक्ष्य कार्यक्रम के निर्देशक नियुक्त किए गए हैं, पद पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा । अब तक सलाहकार बोर्ड के प्रधान पद के सम्बन्ध में कोई निर्णय नहीं किया गया था ।

प्रेस सम्मेलन में प्रैसिडेन्ट ने यह भी घोषणा की कि अमेरिकी प्रतिरक्षा मन्त्री मार्शल द्वारा रिक्त अमेरिकन रैडक्रौस के प्रधान पद पर रोलैन्ड हैरिमैन कार्य करेंगे । आप ने यह भी बताया कि स्पेन के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने के विषय में राष्ट्र संघीय वृहत्सभा द्वारा अन्तिम निर्णय होना बाकी है । अमेरिका द्वारा स्पेन के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित करने में अभी बहुत समय लगेगा ।

फिलिपीन सम्बन्धी बैल रिपोर्ट के सम्बन्ध में आपने कहा कि उक्त रिपोर्ट का फिलिपीन के प्रैसिडेन्ट क्विरिनो ने स्वागत किया है और अमेरिका इसको असली रूप देने में फिलिपीन को पूरा सहयोग देगा । उक्त रिपोर्ट में अमेरिका से ऋण और अनुदान लेकर फिलिपीन की अर्थ व्यवस्था को मजबूत करने की सिफारिशें की गई हैं ।

यू० एस० आई० एस०